आओ राष्ट्र रक्षा में जुट जाएँ

डॉ. के. वी. पालीवाल

हिन्दू चुनौतियों के घेरे में

आज भारत, और विशेषकर हिन्दू समाज, अपनी सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक समस्याओं के कारण अनेक आन्तरिक एवं वाह्य संकटों से जूझ रहा है । इन आन्तरिक खतरों ने देश की अखण्डता और अस्तित्तव पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया है । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री माधवराव सदाशिव राव गोलवलकर उर्फ ' गुरु जी ' ने अपनी पुस्तक " बंच ऑफ थॉट्स " (पृ0 177–196) में देश की आन्तरिक सुरक्षा के लिए जिन तीन खतरों को मुख्य बताया है, वे हैं– कट्टरपंथी इस्लाम, साम्राज्यवादी ईसाइयत और साम्यवाद । यदि इनमें, वर्तमान में सत्ता के लिए वोट बैंक और जातिगत राजनीति को और जोड़ लें, तो ये पाँच तत्त्व भारत की अखण्डता के लिए खुली चुनौती की कहानी को पूरा कर देते हैं ।

हिन्दू धर्म पर पहला हमला : हिन्दुओं के सामने ऐसी विकट धार्मिक व राजनीतिक परिस्थितियाँ पहले भी आई थीं । हिन्दु धर्म पर पहला हमला 2500 वर्ष पहले हुआ । तब आदि शंकराचार्य ने, बौद्धों के हिन्दू धर्म पर अनीश्वरवादी आक्रमण को, शास्त्र और शस्त्र के बल से निरस्त किया तथा हिन्दूधर्म को पुनः स्थापित किया , जिसे शंकर दिग्विजय के नाम से जाना जाता है , और आगे भी, हिन्दू धर्म को विनाश से बचाने और उसे सुदृढ़ रक्षा कवच देने के लिए भारत के चारों कोनों में चार मठों की स्थापना की, जहाँ से धर्माचार्य प्रशिक्षित होकर, भारत ही नहीं सो विश्व में हिन्दू धर्म को स्थापित व सुदृढ़ कर सकें । परन्तु बाद के धर्माचार्यों ने उस ' शास्त्र और शस्त्र आधारित व्यवस्था एवं परम्परा को भुला दिया तथा ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या कहकर इसे अध्यात्म तक सीमित कर दिया ।

हिन्दू धर्म पर दूसरा हमला : भारत का दूसरा हमला , पहली सदी में ईसाई, क्रुसेडों, और आठवीं सदी में, इस्लामी जिहादियों ने किया जो अठाहरवीं सदी तक चलता रहा । इनके फलस्वरूप लाखों हिन्दुओं का बलात् धर्मान्तरण किया गया , और उनके देश पर पहले इस्लामी, और बाद में ईसाई राज्य

स्थापित किया गया । हालाँकि इस बीच राजपूतों, मराठों एवं सिख गुरुओं ने महान् संघर्ष एवं बलिान किए । उन्नीसवीं सदी में महर्षि दयान्न्द सरस्वती ने , ईसाइययों और मुसलमानों के इन धर्म प्रेरित राजनैतिक व धार्मिक आक्रमणों उत्तर देने क लिए, शास्त्र की दृष्टि से उनके धर्म ग्रंथों की तार्किक आधार पर निर्भयता एवं प्रामाणिकता के साथ, कटु आलोचना की, राजपूतों को संगटित होने एवं युवकों को स्वराज्य प्राप्ति के लिए आह्वान किया व देश को सृदृढ़ आधाार दिया ।

हिन्दू धर्म पर तीसरा हमला एवं विश्वासघात : हिन्दू भारत पर सबसे घातक तीसरा हमला, 1947 में, गाँधी नेहरु कांग्रेस ने देश का विभाजन करके किया । भूलिए मत कि 1947 में, भारत स्वतंत्र नहीं हुआ था, बल्कि भारत का विभाजन हुआ था जिसे शेष भारत की सत्ता ईसाई अंग्रजों से मुस्लिम परस्त गाँधी नेहरु कांग्रेस को स्थानान्तरित हुई थी, तो हिन्दुओं के साथ एक महान विश्वासघात किया गया था । सत्ता लोलुप नेहरु कांग्रेस ने द्विराष्ट्र सिद्धान्त तो माना, और मुसलमानों को पाकिस्तान दिया । परन्तु इसकी दूसरी शर्त हिन्दू मुस्लिम आबादी की अदला बदली को क्रियान्वित नहीं किया । परिणामस्वरूप पाकिस्तान में बसे लाखों हिन्दुओं की हत्या कर दी गयी , और इसके विपरीत , भारत में बसे शत प्रतिशत मुसलमानें ने, हिन्दुओं के साथ न रहने के कारण, पाकिस्तान मांगा, उनमें से अधिकांश शेष भारत को भी इस्लामी राज्य बनाने के लिए यहीं बसे रहे । नेहरु ने भी उन्हें यहाँ बसाए रखा ताकि मुस्लिम वोटों के सहारे वह व उसका वंश लम्बे समय तक भारत पर राज करता रहे , तथा बाद में शेष भारत को भी मुसलमानों को दे दें । भारत विभाजन कर मुसलमानों को, इस्लामी राज्य पाकिस्तान दिया गया , पर हिन्दुओं को हिन्दू राज्य नहीं मिला बल्कि हिन्दू विरोधी छद्म सेक्यूलर राज्य मिला जिसकी आड़ में हिन्दुओं को अनेक धार्मि राजनैतिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया है तथा मुसलमानों को, भारत को इस्लामी राज्य बनाने के लिए, सभी वैधनिक अधिकार दे दिए गए हैं (अनुच्छेद 25–30)

आज भारत में मुसलमानों को विश्व के किसी इस्लामी राज्य से भी कहीं ज्यादा अधिकार व सुविधाएँ प्राप्त हैं । ऐसे विशेषाधिकार भी उन्हें तब दिए गए हैं, जबकि मुसलमान सैक्यूलरिज्म में विश्वास नहीं रखते हैं । वे भारत को सैक्यूलर

राज्य केवल इसलिए मानते है, ताकि भारत हिन्दू राज्य न हो जाए । प्रारम्भ से ही चली आ रही प्रांन्तवाद भाषावाद, जाति वाद, आरक्षणवाद, मुस्लिम ईसाई तुष्टीकरणवाद एवं छद्म सैक्यूलरवाद की नीतियों ने हिन्दू समाज एवं दंश को सैकडों खेमों में बाद दिया है । स्कूलो में हिन्दू धर्म शिक्षा पर प्रतिबन्ध के फलस्वरूप, 1947 के बाद जन्मी सम्पूर्ण पीढ़ी हिन्दू धर्म चेतना विहीन हो युकी है । हिन्दुओं के ईसाइयत एवं इस्लाम में धर्मान्तरण व अनेक कारणों से हिन्दुओं की संख्या लगातार घट रही है तथा मुसलमानें की जनसंख्या देश की औसत वूद्धि प्रतिशत दर से डेड़ गुना तेजी से बढ़ रही है । परिणामस्वरूप 2060 तक, हिन्दू अल्पमत में हो जाऐगें । अधिकांश प्रिन्ट और इलैक्ट्रौनिक मीडिया, हिन्दू धर्म एवं संस्कृति को नष्ट करने में संलग्न हैं ।

मुस्लिम तुष्टीकरण : सत्ता में बने रहने के लिए कांग्रेस ने प्रारम्भ से ही मुसिलम तुष्टीकरण की नीति अपनाई व कश्मीर समस्या पैदा की, तीन करोड़ बांग्लादेशी मुसलमानें में से , 80 लाख को आसाम में, 60 लाख को पश्चिमी बंगाल, 50 लाख को बिहार व शेष को देश के अन्य भागो में विधिवत बसाया , और आसाम मे तो इनका ही राज्य चलता है । इंदिरा गाँधी के 15 सूत्रीय कार्य क्रम के अंतर्गत मुसलमानों को सस्ती ब्याज दर कर्ज, शिक्षा, रोजगार व आर्थिक सहायता की व्यवस्था आदि की । मगर 2004 के चुनाव तथा मुस्लिम लीग व वाममागिर्यो साथ गइबंधन के बाद तो कांग्रेस नीत यूपीए सरकार ने मुस्लिम तुष्टीकरण की पराकाष्ठा ही कर दी । जैसं :– (1)आतंकवाद मे फंसें मुसलमानों को बचाने के लिए पोटा निरस्त कर दिया जिसके अभाव में आतंवाद पर काबू पाना मुश्किल हो रहा है (2) पिछली सरकार के आयकर दाताओं एवं बार बार हज करने वालों को मिलने वाली सब्सिडी पर लगे प्रतिबन्ध को निरस्त कर दिया । (3) पाठ्य पुस्तको में से पिछली सरकार द्वारा निकाले गए हिन्दू विरोधी और मुस्लिम उन्मुख अंशों दोबार मुस्तकों मे डाल दिया गया । (4) आतंकवाद को प्रोत्साहित करने वाली मदरसा व्यवस्था को न केवल दोष मुक्त बताया बल्कि उन्हें भारी आर्थिक सहायतादी । (5) ओबीसी विद्यार्थियों को केन्द्र सरकार से समर्थित उच्च शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश के लिए आरक्षण देते समय अल्प संख्यकों के संस्थानों को इस आरक्षण से मुक्त रखा गया तथा मदरसा शिक्षा व्यवस्था को बढ़ावा दिया । (6) मुस्लिम पर्सनल

कानून और शरिया कोर्टों का समर्थन किया । (7) इलाहाबाद हाई कोर्ट के विरोध के बावजूद, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को सरकारी खर्चे पर अल्पसंख्यक स्वरूप बनाए रखने बल दिया । (8) सच्चर कमेटी द्वारा मुस्लिमों के पिछड़ेपन का गीत गाया तथा इसके लिए 5480 करोड़ का प्रावधान किया गया । (9) अल्पसंख्यकों के नाम पर मुसलमानों के लिए एक अलग मंत्रालय बनाया । (10) उनके लिए मुस्लिम आर्थिक कार्पोरेशन का गठन किया । (11) मुसलमानों के कल्याण के लिए बजट में 15 प्रतिशत राशि निर्धारित की । (12) सरकार का इस्लामी आतंकवाद को रोकने में कोई रुचि दिखाई नहीं दे रही है । इसीलिए पाकिस्तान व बंग्लादेश की आतंवादी गतिविधियाँ , जिनमें अनेक भारतीय मुसलमान सहयोग दे रहें हैं, दिन रात बढ़ती जा रही है । (13) 13 दिसम्बर 2001 के संसद पर हमले के दोषी अफजल खां को 20 अक्टूबर 2006 को दी जाने वाली फांसी अधर में है , क्योंकि अपराधी एक मुसलमान है । यदि ऐसा अपराधी हिन्दू होता तो कभी की सजा दे दी गयी होती । (14) और आश्चर्य है कि प्रधानमंत्री ने तो 17 दिसम्बर को नेशनल डवलपमेंट काउंसिल की मीटिंग में यहाँ तक कह दिया कि **भारतीय संसाधनों पर मुसलमानों का अधिकार पहला है ।** उपरोक्त गतिविधियों से अनुमान लगता है कि यूपीए सरकार अपने इसी कार्यकाल (2004) में ही भारत को इस्लामी राज्य बनाकर रहेगी ।

बहुसंख्यक हिन्दुओं की उपेक्षा और मुसलमानों के सामने सरकार का समर्पण :– इस सौतेले व्यवहार ने हिन्दुओं के अन्दर एक हताशा एवं आक्रोश का वाताकरण पैदा कर दिया है । **आज हिन्दू को अपने अस्तित्त्व का भय दिखाई दे रहा है , उसका मूल कारण कांग्रेस द्वारा जानबूझकर 1947 में हिन्दू मुस्लिम आबादी की अदला बदली न करना और तभी से लगातार मुसलमानों का तुष्टीकरण है ।** जबकि सच्चाई यह है कि मुसलमानों को अपना इस्लामी राज्य पाकिस्तान मिलने के बाद उनका भारत में बसे रहने का कोई अधिकार नहीं रह गया था, और फिर उन्हें कोई अलगाववादी तथा आर्थिक व राजनैतिक मांगे रखने का कोई औचित्य नहीं रह गया है , कोई विशेषाधिकार देने का तो प्रश्न नहीं उठता, विशेषकर , जबकि वे थारत की मुख्य धारा में नहीं मिलते, , उल्टे अपने विधि विधान मुस्लिम पर्सनल कानून और शरिया कोर्ट चलाना चाहते

है। क्योंकि कुरान की शिक्षाओं के अनुसार, उनका सुस्पष्ट अन्तिम उद्देश्य भारत में इस्लामी राज्य स्थापित करना है , और हिन्दू धर्म और संस्कृति को समूल नष्ट करना है जैसा कि उन्होंने पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ किया है :–

(1) दीन तो अल्लाह का इस्लाम है (3 : 19), 2) उनसे युद्ध करो जहाँ तक कि फितना शेष न रहे और दीन अल्लाह का न हो जाए वही है जिसने अपने रसूल को मार्ग दर्शक और सच्चे दीन सत्य धर्म के साथ भेजा ताकि उसे समस्त दीनों पर प्रभुत्व प्रदान करे, चाहे मुशरिकों को नापसन्द क्यों न हो (9 : 33)

इन्हीं मुस्लिम तुष्टीकरण की नीतियों के कारण इस्लामी जिहादी और कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा समर्थित माओवादी आतंकवादी देश के विभिन्न क्षेत्र में सक्रिय हैं । इन्हीं नीतियों के कारण आतंकवाद समाप्त नहीं हो रहा है, न होगा ही । मुस्लिम लीग और वामपंथियों की बैसाखियों पर टिकी वर्तमान यूपीए सरकार सत्ता में बने रहने के लालच में इनकी राष्ट्र विरोधी एवं इस्लामी आतंकवादी गतिविधियों के विरुद्ध कोई ठोस कदम उठाना नहीं चाहती है, भले ही भारत का फिर से विभाजन क्यों न हो जाए । **इनके लिए अल्पसंख्यकों का वोट राष्ट्रीय अखंडता और भारत की सुरक्षाा से भी अधिक कीमती हो गया है ,** जबकि मुस्लिम राजनैतिक संगठनों का अन्तिम उद्देश्य शेष भारत में इस्लामी राज्य स्थापित करना है ।

अब विदेशी मुस्लिम ताकतें और स्वदेशी मुसलमान भी विदेशी आक्रमण एवं खुले युद्ध के बजाय , भारत को अन्दर से ही तोड़ना चाहते है तथा सपा , कांग्रेस , राजद, सी. पी. एम. आदि दल उनकी राष्ट्रविरोधी गतिविधियों की उपेक्षा कर रहे हैं । साथ ही उनकी उचित अनुचित सभी राजनैतिक व आर्थिक मांगों का समर्थन कर रहे हैं ।

विडम्बना तो यह है कि इन सब पार्टियों के नेता हिन्दू ही हैं , और यह उस देश के हिन्दू नेताओं की मानसिकता है जिनके पूर्वजों, विशेषकर हिन्दू राजाओं, राजपूतों, मराठों एवं सिख गुरुओं ने स्वदेश व स्वधर्म की रक्षा के लिए सदियों (700 – 1800 एडी) विदेशी आक्रकमकों एवं मुस्लिम सुलतानों से

लोहा लिया , संघर्ष किया और प्रशंसनीय बलिदान किए । इनका शौर्यपूर्ण इतिहास इसका साक्षी है ।

फिर क्या करें

1. स्वधर्म रक्षा के प्राचीन गुरुमंत्र अपनाएं : हमारे धर्म शास्त्रों ने स्वदेश, स्वधर्म एवं स्वसंस्कृति की रक्षा के लिए देशवासियों में संकल्प शक्ति एवं राष्ट्र भक्ति जगाने की विधियों के साथ साथ सशस्त्र धर्मयुद्ध करने का भी आदेश दिया है । इनका मूलमंत्र : **ब्राह्मबल** और **क्षात्रबल** का समुचित समन्वय करना । यजुर्वेद (20 : 25) का संदेश है – **यत्र ब्रह्मं च क्षत्रं सम्यंचौ चरतः सह। तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवा सहाग्निना** यानी जिस देश में ब्राह्म (ज्ञान विज्ञान की शक्ति) और क्षत्रिय बल (सैनिक शक्ति, राष्ट्र भक्ति व सामुदायिक बल) मिलकर कार्य करते हैं, वह देश कल्याणकारी, सुरक्षित और सब प्रकार से उन्नत होता है । यही बात महाभारत में कही गयी है जैसे –

अग्रतः चतुरो वेदाः प्रष्टतःसशरोधनु ।
इदं ब्राह्म इदं क्षात्रं शास्त्रदपि शस्त्रदपि ।।

चारों वेदों की प्रामाणिकता और शस्त्र बल से धर्म की पुष्टी करो । एक तरफ शास्त्रादि के **ब्राह्मबल** और दूसरी तरफ शस्त्रादि के **क्षात्र बल** से स्वधर्म एवं स्वदेश की रक्षा करो । इसका अर्थ यह हुआ कि देश का प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म शास्त्रों को जाने जिससे राष्ट्र भक्ति जागृत हो, स्वधर्म पालन की प्रेरणा मिले तथा स्वदेश रक्षा के लिए यदि आवश्यक हो तो शस्त्राादि से शत्रु से संघर्ष करो । इसीलिए हिन्दू धर्म शास्त्रों में क्षात्र या क्षत्रिय धर्म सबसे पहले स्थापित किया गया है और स्वधर्म, स्वसंस्कृति एवं स्वदेश की रक्षा करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए क्षत्रिय धर्म को अपनाना सर्वोपरि माना गया है । इस विषय में महाभारत कहता है

1. असैनिका धर्मपराश्च धर्म परांगतिं न नयन्ते हृत्त्म् ।
क्षात्रो धर्मों ह्मदि देवात् प्रवृतः पश्चादन्ये शेष भूताश्च धर्मों ।

(शां. प. 64 : 21)

आदि देव भगवान् से सबसे पहले क्षात्र या क्षत्रिय धर्म ही प्रतृत्त हुआ है ˙ अन्य धर्म उसी के अंग हैं जो बाद में प्रगट हुए हैं । जो राजा (नेता) सैनिक दृष्टि

से सम्पन्न नहीं हैं, धर्म परायण होते हुए , वे प्रजा की अनायास ही धर्म विषयक परम गति की प्राति नहीं करा सकते हैं ।

2. शेषाः स्पष्ट ह्यानन्ता सप्रस्थानाः क्षात्र धर्म विशिष्ट ।
आस्मिन् धर्मे सर्वधर्माः प्रविष्टास्तस्मा् धंर्म श्रेष्ठमिम् वदन्ति ।।
(शां. प. 64 : 22)

'' क्षत्रिय धर्म की सर्वश्रेष्ठ है । शेष धर्म असंख्य है। और इनके फल भी विनाशशील हैं । इस क्षत्रिय धर्म में सभी धर्मों का समावेश हो जाता है । इसीलिए इस धर्म को श्रेष्ठ धर्म कहते हैं । ''

3. **सर्वधर्मपरं क्षात्रं लोकं श्रेष्ठ सनातनम् ।**
शश्वदक्षर पर्यन्तमक्षरं सर्वतो मुखम् ।।

'' इस प्रकार संसार भर में क्षत्रिय धर्म ही सब धर्मों में श्रेष्ठ, सनातन, अविनाशी एवं मोक्ष तक पहुँचाने वाला सर्वतोमुखी है । ''

4. लोक ज्येष्ठं क्षात्र धर्मं । (शां. प. 64 : 26) '' लोक में क्षत्रिय धर्म ही सबसे श्रेष्ठ है । ''

अतः स्वधर्म, स्वदेश एवं स्व बन्धुओं की सुरक्षा एवं स्वदेश की सर्वागीण उन्नति के लि प्रत्येक व्यक्ति का सबसे पहला कर्त्तव्य , अपने हृद्य में बसी क्षत्रिय प्रवत्तियों को जगा कर क्षत्रिय धर्म अपनाना है क्योंकि आत्मा परमात्मा का चिन्तन मननन, ध्यान, आराध्ना, कथा कीर्तन, सत्संग आदि केवल स्वराज्य में ही संभव है । परतंत्र, हिन्दू धर्म विरोशी , या इस्लामी राज्य में कदापि नहीं । संक्षेप में , निर्विघ्न ईश्वर पूजा पाठ के लिए भी पहले स्वतंत्र, स्वाधीन एवं स्वधर्मानुसार राज्य व्यवस्था का होना अति आवश्यक है । अतः **राष्ट्रभक्ति ही ईश्वर पूजा है ।**

2. राजधर्म को प्रधानता दो

महाभारत में क्षत्र धर्म को राजधर्म भी कहा है और क्षा धर्म के समान राजधर्म को भी सर्वश्रेष्ठ धर्म माना गया है, जैसे :– 1. सर्वे धर्मा राजधर्म प्रधानाः । सर्वेवर्णाः पाल्यमान भवन्ति ।

'' सब धर्मों में राजधर्म सबसे श्रेष्ठ है । इसी से सब वर्णों की पालना होती है । ''

2. सर्वे त्यागा राजधमेषु दृष्टाः। सर्वा दीक्षा राजधर्मेषु योक्ता ।
सर्वा विद्या राजधर्मेषु युक्ताः । सर्वे लोकाः राजधर्मेषु प्रविष्ठाः ।।

(शां. प. 63 : 29)

'' राजधर्म मेंसारे त्यागों का दर्शन होता है । राजधर्म में सारी दीक्षओं का प्रतिपादन होता है ˙ राजधर्म में सम्पूर्ध विद्याएं निहित होती हैं और राजधर्म में सारे लोकों का समावेश होता है । ''

यानी राजधर्म द्वारा सारे संसार पर आधिपत्य किया जा सकता है । हिन्दू राजधर्म का अर्थ है – '' राज्य सत्ता पाना और उसे पक्षपात रहति, समतावादी व्रूवस्थानुसार लोक कल्याणके लिए न्यायपूर्वक चलाना । '' अतः सांसारिक भोगों को प्राप्त करने एवं निर्विघ्न अध्यात्म आराधना करने दोनों के लिए स्वदेश पर अपनी राज व्रूवस्था होना सर्वोत्तम है ।

फिर क्षत्रिय धर्म है क्या – आमतौर पर विश्वास है कि क्षत्रिय जाति का युद्ध के मैदान में शत्रु से युद्ध करना ही क्षत्रिय धर्म है । परन्तु वास्तव में , हिन्दू धर्म के अनुसार, क्षत्रिय धर्म अति व्यापक है :

आत्म त्यागः सर्वभूतानुकम्पा लोक ज्ञानं पालनं मोक्षणं च ।
विषपणानामोक्षण पीड़ितानां क्षात्र धर्मे विद्यते पार्थिवानाम् । (शां , प. 64 : 27)

'' शत्रु से युद्ध करते समय अपने शरीर की आहुति देना, समस्त प्राणियों पर दया करना, लोक व्यवहार का ज्ञान प्राप्त करना, प्रजा की रक्षा करना, विषाद ग्रस्त व पीड़ित स्त्री पुरुषों को दुखों से मुक्ति दिलाना आदि सभी बातें क्षत्रिय धर्म में समाहित हैं । '' अतः क्षत्रिय धर्म केवल उन लोगों तक सीमित नहीं है जो सेना मैं भर्ती होकर राष्ट्र रक्षा के लिए बलिदान होते है।, अथवा जो एक जाति विशेष के लोग है, जो राजपूत कहलाते है। , बल्कि समाज के हर वर्ग के स्त्री, पुरुषों व बच्चों पर होने वाले सामाजिक आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक शोषणों एवं अन्यायों से मुक्ति दिलाने के लिए संघर्ष करने का नाम क्षत्रिय धर्म है, और जो ऐसा करते हैं, वे सभी क्षत्रिय हैं वैदिक वर्ण व्यवस्था को मानने वाले प्रत्येक हिन्दू के हृद्य में ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्व शुद्रत्व की प्रवृत्तियाँ समरसता के साथ विद्यमान रहती हैं यानी **प्रत्येक हिन्दू ब्राह्मण भी है, क्षत्रिय भी है , तथा वैश्य और शूद्र भी है** और आवश्यकतानुसार इनमें से कोई भी प्रवृत्ति सारे

व्यक्तित्व पर छा जाती है जो इस वर्ण की प्रवृत्ति के कर्त्तव्य को पूरा करती है ।

अतः धर्म एवं राष्ट्र रक्षा के संदर्भ में , प्रत्येक हिन्दू पहले क्षत्रिय है, फिर कुछ और । क्षात्र धर्म की उपरोक्त परिभाषा के अनुसार प्रजा की रक्षा करना क्षत्रिय का धर्म है और आज भारत की 85 प्रतिशत प्रजा हिन्दू है जिसके राजनैतिक हितों व धार्मिक अधिकारों की उपेक्षा हो रही है और उनकी रक्षा करने के लिए संषर्ष करना ही क्षत्रिय धर्म का पालन करना है । अतः आज की आवश्यकता है कि प्रत्येक हिन्दू स्वदेश एवं स्वधर्म की रक्षा के लिए अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करे ।

धर्मा रक्षति रक्षितः– पहले, राजा स्वयं तथा सैनिकों व देशवासियों की सहायता से शत्रु से लड़कर राज्य व प्रजा और उसके धर्म की रक्षा करता था, और भारतीय इतिहास साक्षी है कि न केवल राजा व उसकी सेना के बल्कि ब्राह्मणों व अन्य जातियों यहाँ तक कि स्त्रियों व बच्चों ने भी सशस्त्र युद्धकर राष्ट्र व धर्म की रक्षा मे महान योगदान दियरा । परन्तु आज के हिन्दू विरोधी छद्म सैक्यूलरवादी प्रजातंत्र में प्रजा या हिन्दू को अपने राष्ट्र व धर्म की रक्षा प्रजातंत्रीय ढंग से स्वयं करनी होगी वर्ना वह स्वयं मर जाएगा जैसाकि मनुस्मृति में कहा गया है :

धर्म एव हतो हन्ति धर्मा रक्षति रक्षितः ।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोवधीत् ।। (8 : 15)

मारा हुआ धर्म मारने वाले का नाश, और रक्षित किया हुआ धर्म, रक्षक की रक्षा करता है । इसलिए धर्म का हनन कभी न करो, इस डर से कि मारा हुआ धर्म, कभी हमको ही न मार डाले । ''

3. प्रजातंत्र में क्षत्रिय धर्म कैसे अपनाएँ – अपने धर्म और संस्कृति को निर्विघ्न अपनाने के लिए व्यक्ति एवं राष्ट्र की सुरक्षा सबसे पहली आवश्यता होती है, जोकि राजधर्म से ही संभव है। अतः हिन्दुओं को धर्म, अर्थ काम और मोक्ष दिलाने वाली , उनके अन्दर विद्यमान , उनकी क्षत्रिय वृत्ति एवं कर्मठता ही है । यह क्षत्रिय धर्म ही है जो कि उन्हें शस्त्र से संघर्ष करने को प्रेरित करता है । महाभारत व मनु स्मृति के धर्म रक्षा के उपरोक्त सूत्र, जितने प्राचीन काल में सच्चे थे, उतने आज भी हैं । **आज हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति एवं स्वयं हिन्दुओं**

रक्षा केवल कर्म काण्ड, कीर्तन, चिन्तम मनन और सत्संग से नहीं हो सकती । निस्संदेह अध्यात्म साधना नैतिक शक्ति देती है परन्तु बिना राजधर्म या राजशक्ति के अध्यात्म भी स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकता है । इसके लिए धर्माचार्यों को हिन्दू धर्म शिक्षा की व्यवस्था प्रत्येक गाँव में करनी चाहिए तथा उन्हें अपने उपदेशों में राजधर्म और राजशक्ति पाने की प्रेरणा देना चाहिए । इसी लिए आधुनिक पुरोधा वीर सावरकर ने आत्मरक्षा के लिए यह सूत्र दिया : **" राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दू का सैनिकीकरण करों "** दुर्भाग्य से भारत का वर्तमान संविधान न केवल पक्षपाती एवं हिन्दू भी विरोधी है , बल्कि विघटनवादी है जिसे प्रजातंत्रीय ढंग से बदलने की जरूरत है । यह तभी सम्भव है, जब संसद एवं विधान सभाओं में राष्ट्रवादियों का का आवश्यक बहुमत हो । आज देश की सुरक्षा केवल न्यायपालिका सुप्रीम कोर्ट आदि, और सेना के भरोसे रह गयी है जिसे भी, मुस्लिम सिरों की गिनती करके व राष्ट्रीयता की उपेक्षा करे, साम्प्रदायिक रंग से रंगा जा रहा है । ऐसे में दृढ़ संकल्पी राष्ट्र, एवं धर्म रक्षा को समर्पित राष्ट्र भक्तों की आवश्यकता है जो पुलिस व सेना को स्थानीय दृष्टि से सहायक हो सकें । **यह कटु सत्य है कि अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामी जिहाद और साम्राज्यवादी ईसाइयल की आँधी को थोथे, अकर्मण्य और छद्म सैक्यूलरिज्म से नहीं रोका जा सकेगा** जब तक कि समान के प्रत्येक व्यक्ति के हृद्य में राष्ट्र भक्ति औश्र स्वदेश रक्षा का दृढ़ संकल्प न हो । ऐसे में हमें इसी हिन्दू समान में से अनेक राष्ट्र भक्तों के त्याग, तपस्या, साधना, और प्रचार, प्रसार से सामूहिक हिन्दू शक्ति पैदा करनी होगी , हिन्दू वोट बैंक सुदृढ़ करना होगा । इस शक्ति से हिन्दू का आत्म गौरव, आत्म सम्मान एवं स्वाभिमान जागृत करना होगा एवं स्वधर्म एवं स्वदेश की रक्षा होगी ।

राष्ट्र रक्षा के लिए आह्वान

मत भूलों । हे आर्यों । हे हिन्दुओं । राष्ट्र रक्षा के लिए आह्वान तुम विश्व की सर्वश्रेष्ठ प्राचीनतम जाति हो जिसने विश्व को जियो और जीने दो का सबसे पहले संदेश दिया । मानवता, सहअस्तित्त्व व समतावादी मानवता के उच्च आदर्श दिए । आज विश्व धर्मो में जो मानवता दिखाई देती है, उसका आदि स्रोत, हिन्दुओं का वेद ज्ञान है और वही समस्त हिन्दुओं की एकता का मुख्य आधार भी है ।

अतः यदि हिन्दू अपने धर्म, संस्कृति वे देश की रक्षा और संवर्धन चाहते हैं, तो प्रत्येक हिन्दू अपने अन्तःकरण में सोए हुए क्षत्रियत्व को जगाए और धर्म रक्षा का व्रत लेकर अपीन योग्यतानुसार धर्म रक्षा के विभिन्न कार्यों में जुट जाएं क्योकि वर्तमान परिस्थितियों में धर्म रक्षा का दायित्व केवल सेना, सरकार चा क्षत्रिय कही जाने वाली जाति पर नहीं , बल्कि प्रत्येक हिन्दू पर है । हमें अपने अस्तित्त्व की लड़ाई स्वयं लड़नी है । हमारे पूर्वजों ने हमारे धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष कर हमें बचाया है और अब हमारा कर्त्तव्य बनता है हम अपनी भावी पीढ़ी की सुरक्षा के लिए त्याग, संघर्ष एवं बलिदान करें । अतः पहले हम अपनी सोई हुई क्षत्रिय प्रवृत्तियों जगाएं और फिर सम्प्रदाय, भाषा, बोली, जाति उपजाति, क्षेत्र, प्रान्त आदि के भेदभावों भुलाकर धर्मरक्षा का संकल्प लेकर रचनात्मक कार्यो में जुट जाएं । इससे समाज में समरसता बढ़ेगी, राष्ट्र भक्ति जागेगी । राष्ट्रीय एकता व अखण्डता सुरक्षित होगी । हम निजि स्वार्थों , पद व मानके प्रलोभनों और आर्थिक लाभों को त्यागकर एवं राजनैतिक दलों से उपर उठकर , भारत में , भारत में समता वादी व मानवतावादी हिन्दू राज्य स्थापित करने में जुट जाएँ । वर्तमान परिस्थितियों में, हिन्दू धर्म, संस्ृति एवं स्वयं अपने हिन्दू अस्तित्त्व की रक्षा और अन्य सभी समस्याओं और चुनौतियों का एकमात्र निदान एवं समाधान भारत में हिन्दू राज्य स्थापित करना है, और

यदि यह प्रयास अभी से नहीं किया गया, तो बाद में ऐसा कर पाना और भी अधिक कठिन हो जाएगा ।

भारतीय मुसलमानों का राजनैतिक लक्ष्य

डा0. के. वी. पालीवाल

इस्लामी सिद्धान्त, आदर्श और विधि विधान का एकमात्र अन्तिम लक्ष्य सभी अन्य धर्मों को नष्ट कर विश्व भर में इस्लामी साम्राज्य एवं अरबी संस्कृति स्थापित करना है । क्योंकि '' इस्लाम एक धर्म नियंत्रित राजनैतिक आन्दोलन है '' जी. एच. जानसेन के अनुसार '' इस्लाम में धर्म और राजनीति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । '' (मिलिटैंट इस्लाम)

यह बात प्रत्येक गैर मुस्लिम भारतीय को भली भाँति समझ लेनी चाहिए कि पाकिस्तान व बंग्लादेश बनने के बाद भी मुसलमानों का एकमात्र अन्तिम लक्ष्य भारत को भी इस्लामी राज्य बनाना और समस्त गैर इस्लामी धर्मों जैसे हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख, ईसाई आदि को समाप्त करना है जैसी कि उनको कुरान (अनु. मुहम्मद फारुख खां, 1980) का आदेश है :–

(1) दीन तो अल्लाह का इस्लाम है (3 : 19 : पृ. 188) (2) उनसे युद्ध करो जहाँ तक कि फितना शेष न रहे और दीन अल्लाह का न हो जाए । (2 : 193) पृ.158 (3) वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सच्चे दीन सत्य धर्म के साथ भेजा ताकि उसे समस्त दीन पर प्रभुत्व प्रदान करे, चाहे मुश्रिकों को नापसन्द क्यों न हो । (9 : 33 , पृ. 373)

इसीलिए मुस्लिम नेताओं ने अपनी राजनैतिक आकाक्षांए सुस्पष्ट कर दी हैं :–

1. हकीम अजमल खाँ ने कहा – एक ओर भारत और दूसरी ओर एशिया माइनर भावी इस्लामी संघ रूपी जंजीर की दो छोर की कड़ियाँ हैं जो धीरे धीरे किन्तु निश्चय ही बीच के सभी देशों को एक विशाल संघ में जोड़ने जा रही है

। भाषण का अंश खिलाफत कान्फ्रेंस अहमदाबाद 1921, आई.ए.आर. 1992, पृ. 447)

2. एफ. ए. दुर्रानी ने कहा – भारत सम्पूर्ण भारत हमारी पैतृक सम्पत्ति है औश्र उसका फिर से इस्लाम के लिए विजय करना नितांत आवश्यक है तथा पाकिस्तान का निर्माण इसलिए महत्वपूर्ण था कि उसका शिविर यानी पड़ाव बनाकर शेष भारत का इस्लामीकरण किया जा सके । (पुरुषोत्तम, मुस्लिम राजनैतिक चिंतन और आकांक्षाएँ पृ. 51, 53)

3. कांग्रेस नेता एवं भूतपूर्व शिक्षा मंत्री अबुल कलाम आजाद के पूरे भारत के इस्लामीकरण की वकालत करते हुए कहा – भारत जैसे देश को जो एक बार मुसलमानों के शासन में रह चुका है, कभी त्यागा नहीं जा सकता और प्रत्येक मुसलमान का यह कर्त्तव्य है कि उस खोई हुई मुस्लिम सत्ता को फिर प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करे (बी. आर. नन्दा, गाँधी पैन इस्लामिज्म, इम्पीरियलिज्म एण्ड नेशनलिज्म पृ 117)

4. मौलाना मौदूदी का कथन है कि '' मुस्लिम भी भारत की स्वतन्त्रता के उतने ही इच्छुक थे जितने कि दूसरे लोग ।'' किन्तु वह इसको एक साधन, एक पड़ाव मानते थे , ध्येय मंजिल नहीं । उनका ध्येय एक ऐसे राज्य की स्थापना था जिसमें मुसलमानों को विदेशी अथवा अपने ही देश के गैर मुस्लिमों की प्रजा बनकर रहना न पड़े । शासन दारुल इस्लाम (शरीयः शासन) की कल्पना के, जितना सम्भव हो, निकट हो । मुस्लिम, भारत सरकार में, भारतीय होने के नाते नहीं मुस्लिम हैसियत से भागीदार हो । (डॉ. ताराचन्द्र, हिस्ट्र ऑफ दी फ्रीडम मूवमैंट खंड 3 पृ0 287)

5. हामिद दलवई का मत है कि आज भी भारत के मुसलमानों और पाकिस्तान में भी प्रभावशाली गुट हैं, जिनकी अन्तिम मांग पूरे भारत का इस्लाम में धर्मान्तरण है । (मुस्लिम हिलेमा इन इंडिया पृ. 35)

6. बंग्लादेश के जहांगीर खां ने बंगला देश, पाकिस्तान, कश्मीर तथा पश्चिमी बंगाल, ,बिहार , उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब व हरियाणा के मुस्लिम बहुल कुछ भागों कों मिलाकर मुगलिस्थान नामक इस्लामी राष्ट्र बनाने का सपना संजोया है (मुसलमान रिसर्च इंस्टीट्यूट, जहांगीर नगर, बंग्लादेश, 2000)

सउदी अरब के प्रोफेसर नासिर बिन सुलेमान उल उमर का कथन है कि भारत स्वयं टूट रहा है । यहाँ इस्लाम तेज गति से बढ़ रहा है । और हजारों मुसलमान, पुलिस, सेना और राज्य शासन व्यवस्था मे घुस चुके हैं और भारत में इस्लास सबसे बड़ा दूसरा धर्म हैं । आज भारत भी विध्वंस के कगार पर है । जिस प्रकार किसी राष्ट्र को उठाने में दसियों वर्ष लगते हैं उसी प्रकार उसके ध्वंस होने में भी लगगते हैं भारत एकदम रातों रात समाप्त नहीं होगा। इसे धीरे धीरे समाप्त किया जाएगा निश्चय ही भारत नष्ट कर दिया जाएगा (आर्गे,18.7.04) । इसीलिए मुस्लिम धार्मिक नेता मौलाना वहीदुद्दीन ने सुझाव दिया कि मुसलमानों को कांग्रेस में शामिल हो जाना चाहिए और आगे चलकर उनमें से एक निश्चय ही भारत प्रधानमंत्री हो जएगा । शायद 2004 के चुनावों में मुसलमानों ने यही नीति अपनाई थी ।

भारत सरकार और सभी राजनैतिक दलों को मुसलमानों की इन आंकाक्षाओं गम्भीरता से सोचना तथा समझना चाहिए । मगर हमारा विश्वास हे कि कांग्रस, सी. पी. एम. सपा, राजद आदि के स्वार्थी नेता उनके वोटों के सहारे केवल कुछ दिनों राज करने लिए मुस्लिम तुष्टीकरण और शान्तिपूर्ण जिहाद मे सहयोग देकर शेष भारत के इस्लामीकरण में सहयोग दे रहे है। ऐसे नेता तो चले जाऐंगे लेकिन इनके कारण मानवता, अध्यात्म और उद्दात्त संस्कृति का भारत सदैव के लिए इस्लामी जिहाद की भट्टी में जल कर समाप्त हो जएगा । इसीलिए भारत के इस्लामीकरण को रोकना प्रत्येक देश भक्त का सबसे पहला परम कर्त्तव्य है ।